International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 05, May 2024
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बाल गंगाधर तिलक का योदान

डॉ0 मो0 इमरान खान
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान
मुमताज़ पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की कहानी बालगंगाधर ने अपने बाल–काल में सुनी थी क्योंकि क्रांति के एक वर्ष पूर्व उनका जन्म हुआ था। बाल्य–काल में सुनी क्रांति की घटनाओं का उन पर अधिक प्रभाव पड़ा इस तरह जो बीज उन्हें मिला वो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रवाद रूपी वृक्ष के रूप में सामने आया जिसकी छाया में आम भारतवासी राहत की सांस लेने लगा। तिलक उसी ऐतिहासिक चितपावन कुल में पैदा हुए जहा पे"ावा का जन्म हुआ था उन पर बालाजी वि"वनाथ, बाजीराव और ि"ावाजी का प्रभाव था। तिलक और उनके सहपाठी गोपाल कृष्ण आगरकर ने सरकारी नौकरी न कर ि"ाक्षण कार्य चुना। चिपलूणकर और तिलक ने 'पूना इंग्लि"ा स्कूल' की स्थापना 1880 में की, 1884 में डेक्कन एजुके"ान सोसायटी की स्थापना हुयी और 1885 में फर्ग्युसन कालेज खोला गया। सामाजिक प्र"नों पर मतभेद होने के कारण तिलक 1890 में सोसायटी से अलग हो गए, बालगंगाधर पा"चात्य अंग्रेजी ि"ाक्षा भारतीयों को देना चाहते थे क्योंकि वो इसके मानवीय मूल्य–स्वतंत्रता, समानता और भातृत्व की भावना दे"ावासियों में प्रसारित करना चाहते थे, किन्तु सामाजिक सुधार वो जनता में शनैः–"ानैः लाना चाहते थे न कि ब्रिटि"ा सरकार के कानूनों द्वारा वि"ोषकर नौकर"ाही के निर्णय से इसी बात को लेकर उनका आगरकर और गोखले से मतभेद भी हुआ, ये दोनों सामाजिक सुधार को वरीयता देते थे जबकि तिलक पहले स्वाराज यानि अपना राज्य चाहते थे।

1889 में ही तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' नामक पत्र निकालना शुरू किया था। 1890 में सोसायटी से अलग होने पर दोनों पत्र के माध्यम से महाराष्ट्र की जनता को ब्रिटि"ा सरकार की शोषण की नीति का खुलक उजागर किया फलस्वरूप लोगों में उग्र दे"ाभक्ति की भावना जागृत हुयी। इसी क्रम में 1893 में उन्होंने गणपति–उत्सव की शुरूआत की, इसका मुख्य उद्दे"य लोगों में निर्भयता और संघर्ष – शक्ति की भावनाओं को भरना था। इसी तरह ि"ावाजी–उत्सव धूम–धाम से मनाना आरम्भ किया। उस समय अंग्रेजी

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

साम्राज्यवाद के आतंक के कारण खुलकर राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना कठिन था, इसलिए सामाजिक और धार्मिक पर्वों के अवसर पर एकत्रित होकर वीर पूजा करना राष्ट्रोद्धार का महान कार्य हो सकता है, ऐसा तिलक ने महसूस किया और इसे बढ़ावा देकर जनता में सोयी हुयी आत्मा को जागृत किया जिससे लोग अपने धर्म और समाज से एकात्म हुए और फिर उनमें राष्ट्रीय भावना हिलोरे मारने लगी।

1905 में बंगाल विभाजन की चाल को तिलक समझ गए उन्हें लगा कि अब कांग्रेस को अपनी पुरानी याचिका वाली स्थिति से निकलकर सरकार से दो–दो हाथ करना पड़ेगा, इसका मतलब यह नहीं कि वो हिंसा में वि"वास करते थे बल्कि वो निरपेक्ष प्रतिरोध या बहिष्कार का रास्ता अपनाना चाहते थे। वो कहते थे कि दे"ा और समाज के लिए कष्ट सहना और जेल तो जाना ही पड़ेगा। इसके लिए उन्होंने 'स्वेद"ाी' का नारा दिया, सन् 1905 से 1908 तक तिलक ने जो कार्य किए उससे नौकर"ाारी धबरा गयी। उन्हें फिर गिरफ्तार किया गया, उनका मुकदमा जिन्ना ने भी लड़ा पर अदालत ने उन्हें छः वर्ष की सजा दी। वो छः वर्ष तक रंगून (यंगून) के मांडल जेल में रहे। इस कारावास में उन्होंने अपना प्रसिद्ध दा"ार्निक और नीति शास्त्रात्मक ग्रन्थ 'गीता रहस्य' लिखा। जून सन् 1914 में तिलक जेल से निकले तो वो एक महान–राष्ट्र योद्धा थे जनता उन्हें असीम प्रेम करती थी, तिलक की बातें लोगों की आँखो में चमक और उम्मीद पैदा करती थी कि भारत एक दिन स्वतंत्र अव"य होगा। 1916 में उन्होने होमरूल लीग (स्वराज) की स्थापना की कुछ दिनों तक आयरलैण्ड की लेडी ऐनीबेसन्ट की होमरूल लीग के साथ मिलकर कार्य किया। 1916 का लखनऊ कांग्रेस का अधिवे"ान ऐतिहासिक मोड़ था जहाँ तिलक के प्रयासों से कांग्रेस के दोनों नरम ओर गरम दल एक हुए और साथ ही कांग्रेस और मुस्लिम लीम के बीच भी समझौता हुआ। इसी अवसर पर तिलक ने अपने भाषाण में 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' का नारा दिया जो भारतीयों के मनमस्तिष्क में पेवस्त हो गया। इस समय तिलक राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं में ि"ाखर पर थे कांग्रेस पर भी उनकी पूरी पकड़ थी और जनमानस भी उन्हें बड़ी उम्मीद की नज़रों से देख रहा था, ऐसे में बालगंगाधर लोकमान्य हो गए।

भारतवासियों में दे"ाभक्ति की भावना जाग्रत करना तिलक के जीवन का मुख्य ध्येय था राजनीतिक जीवन की वास्तविकता की उन्हें अच्छी परख थी इसीलिए उन्हें यर्थाथवादी भी कहा गया वो केवल राजनीतिक बुद्धिवादी नही बने रहे बल्कि उच्चकोटि के व्यवहार कु"ाल राजनेता भी थे, वे लोकतन्त्रवादी थे, उन्होंने दे"ावासियों से प्रेम किया और उन्हें राजनीतिक स्वतन्त्रता का मूल्य समझाया। वह अंग्रेजों से कहते कि पि"चम विचारक लोगों की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं, तो आप अपने ही मूल्यों को भारत में लागू नहीं करते, मुझे स्वराज दिए तभी आपके मूल्य व्यवहारिक होंगे।

तिलक के उग्रविचारों से सरकार वि"ोषकर नौकर"ाही धबरायी रहती थी सर वेलेनटाइन ि"ारोल ने अपनी पुस्तक 'भारतीय अ"ाान्ति' (Indian Unrest) में तिलक को भारतीय आ"ाान्ति का जनक

(Father of Unrest) कहा। उन्होंने अपनी पुस्तक द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि तिलक कट्टर हिन्दू धर्म पर आधारित राष्ट्रवाद के महान पुजारी थे। जबकि सत्यता इसके विपरीत है, ब्रिटि"ा सरकार की शोषण की नीतियों और नौकर"ाही के अत्याचार ने भारत में अ"ाान्ति ला दी थी। तिलक तो जनता को अगाह करते रहे और गलत नीतियों का विरोध करने के लिए प्रेरित करते और स्वराज के लाभ बताते रहे। तिलक वैधानिक सीमाओं से परे नहीं गए। वह स्वराज के लिए जनता में अधिक से अधिक जागृति फैलाना चाहते थे, और दमनकारी तथा अन्यायपूर्ण कानूनों से असहयोग करने के पक्षकार थे। वह सरकार के कानून को वैध तो मानते थे किन्तु वह संवैधानिक हो ये जरूरी नहीं, जनता का हित जिस कानून से हो वही संवैधानिक है वह उस समय ब्रिटेन से सम्बन्ध विच्छेद नहीं चाहते थे, वे ब्रिटि"ा सरकार का दे"ा की वैदे"िाक नीति पर नियंत्रण बने रहने देने के पक्षकार थे। वे प्रान्तों को भाषा के आधार पर विभाजित करने के समर्थक थे वे भारत के लिए एक संघात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत ही भारत के वि"ााल क्षेत्रफल तथा विभिन्न भाषा – संस्कृति वालों को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है जो कांग्रेस कर भी रही थी।

बालगंगाधर तिलक भारतीय स्वतन्त्रता के अग्रदूत थे। ब्रिटि"ा शासन से मुक्ति उनके जीवन का प्रमुख उद्देय था, इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अपना सब कुछ अतुलनीय बौद्धिक प्रतिभा, शारीरिक क्षमता और धन सम्पत्ति दांव पर लगा दिया और अपने त्याग व बलिदान द्वारा स्वतन्त्रता की नींच रखी, अगर यह नींव उन्होंने न रखी होती तो गाँधी स्वाधीनता के भवन को खड़ा करने में असफल तो नहीं किन्तु कठिनाइयों से अधिक जूझते। महात्मा गाँधी ने तिलक के बारे लिखा है, ''उनकी दे"ाभक्ति, उनकी भावना प्रबल थी, वे कोई धर्म नहीं जानते थे, सिर्फ दे"ा का प्रेम, वे जन्म से ही लोकतन्त्रवादी थे। उनका जीवन एक खुली किताब के समान है। उनके दे"ावासियों का उन पर दृढ़ वि"वास था। उनके साहस ने असफलता नहीं आने दी। उनमें अदम्य उत्साह था, वे अपने जीवन काल में स्वराज चाहते थे।''

तिलक के समकालीन रानाडे, मेहता, गोखले, बनर्जी, मालवीय, अरविन्द घोष, लाला लाजपत राय, पाल जैसे महान विद्वान नेता थे, किन्तु तिलक अलग दिखते हैं उन्होंने केसरी, मरठा के जरिए फिरंगियों की कुटिल नीति का पर्दाफा"ा किया वहीं जनमानस में स्वतंत्रता की उमंग पैदा की। तिलक राजनीति में धार्मिक चेतना लाना चाहते थे, वे विदे"ियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करना चाहते थे। वे कर्मयोगी तथा मराठा जाति के चरित्र और आत्मा के प्रतीक थे। नौकर"ाही उन्हें आन्दोलनकर्ता और विद्रोही मानती थी, किन्तु वे रचनात्मक क्रांतिकारी थे। वह भारत के लिए जिए और मरे। वि"व परिदृ"य में वह बिस्मार्क, कैबूर जैसे राष्ट्रवादी थे। वह आम लोगों से जुड़ते थे उन्होंने कहा, ''इससे बढ़कर कोई मूर्खता नही हो सकती कि "िाक्षित वर्ग यह सोचता है कि वह जनगण से अलग वर्ग है। उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि वे सम्पूर्ण के अभिन्न अंग है, जनमुक्ति (जनकल्याण) पर ही उनका कल्याण निर्भर करता है।''

तिलक ने स्वयं अपनी राष्ट्रीयता की भावना के बारे में लिखा है, ''मैं भारत को अपनी मातृभूमि और देवी मानता हूँ। भारत के लोग मेरे सगे सम्बन्धी (रि"तेदार) हैं। मेरा प्रमुख धर्म और कर्तव्य सामाजिक कल्याण (मुक्ति) और राजनीतिक स्वाधीनता है।'' तिलक ने भारतीय राष्ट्रवाद को प्रखर राष्ट्रवाद की धारा दी जिसने आने वाले समय में भारतीयों में शोषण के खिलाफ जूझने की शक्ति दी। तिलक अपने जीवन में भारत की आजादी नही देख सके उनके लक्ष्य को गाँधी ने उन्हीं के आद"ार्ा को सामने रखकर लड़ाई लड़ी दे"ा आजाद हुआ और विकास के पथ पर अग्रसर भी हुआ किन्तु आज भी तिलक का गरीब और गाँधी का अन्तिम व्यक्ति (किसान, मजदूर) उस तरह सुखी नहीं है जैसा दोनों चाहते थे हमारा कर्तव्य है कि तिलक के सपने को साकार करने के लिए उनके आद"ार्ा से प्रेरित हों और भारत को वि"व में उचित स्थान दिलाने का प्रयास करें, वो तब होगा जब समाज में स्वतंत्रता, समानता और न्याय की स्थापना होगी जिसके लिए तिलक जीवन भर संघर्ष करते रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. सीरोल–द इण्डियन अन रेस्ट
2. गणे"ा शंकर विद्यार्थी – क्रान्ति का उदघोष
3. तिलक – गीत रहस्य
4. आर पामदत्ता – इण्डिया टूडे
5. तिलक रायटिंग इन द केसरी